चालीस
अहादीसे शफ़ाअत

आला हजरत फाजिले बरेलवी

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम

चालीस अहादीसे शफ़ाअत
इस्माउल अरबईन फ़ी
शफ़ाअति सय्यिदिल मह़बूबीन

मुसन्निफ़

आलाहज़रत इमाम अह़मद रज़ा क़ादिरी बरेलवी

रद़ियल्लाहु तआला अन्हु

हिन्दी तर्जमा

जनाब मुहम्मद अह़मद साहब

उर्फ़ मुहम्मद महताब अली (M.Sc. CAIIB)

किताब को पढ़ने से पहले इसे .ज़ुरूर पढ़ें

अलहम्दुलिल्लाह! अल्लाह तआला और उसके हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के फ़ज़्ल -ओ- करम और मेरे बुज़ुर्गों के फ़ैज़ से यह किताब "चालीस अहादीसे शफ़ाअत" आपके हाथों में है। वहुत अर्से से तमन्ना थी कि आलाहज़रत मुजद्दिदे दीन -ओ- मिल्लत शाह मुहम्मद अहमद रज़ा ख़ाँ की यह किताब हिन्दी में आए और हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शफ़ाअत को पढ़ कर उनकी हमसे महब्बत के बारे में पता चले और हमारी महब्बत भी उनसे और ज़्यादा हो जाए। यूं तो हम जानते ही हैं कि हमारे आक़ा को पैदाइश से लेकर विसाल फ़रमाने तक हर वक़्त हम गुनाहगारों का ख़्याल रहा और आज भी है और क़यामत तक रहेगा बल्कि रोज़े क़यामत सबसे ज़्यादा होगा जैसा कि इस किताब से भी साबित है। जितनी हमें अपनी फ़िक्र नहीं उससे ज़्यादा उन्हें हमारी फ़िक्र है, यहाँ तक कि वह हमें हमारे माँ-बाप, दोस्त-अहबाब, औलाद हत्ताकि तमाम मख़लूक़ में सबसे ज़्यादा चाहते हैं। जब वह हमे इतना चाहते हैं तो हमे भी उन्हें उतना ही चाहना चाहिए हालांकि यह मुमकिन नहीं मगर इतना तो .ज़ुरूर होना चाहिए कि हम उन्हें अपने माँ बाप, औलाद, दोस्त अहबाब सबसे ज़्यादा प्यार करें।

देखा यह गया है कि हम उनकी महब्बतो शफ़क़त और शफ़ाअत की हदीसें सुन सुन कर कभी कभी बदअमल हो जाते हैं या अपनी बदअमली पर डटे रहते हैं और अपनी बदआमालियों से अपने आक़ा (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) को तकलीफ़ पहुँचाते हैं। हम ये सोचने लगते हैं कि जब वह हैं हमारे सिफ़ारशी और हमे जन्नत में ले जाने वाले तो अब नेक अमल करके क्या करें दुनिया का ही मज़ा ले लें आख़िरकार हमे जन्नत में तो जाना ही है। बेशक हर सुन्नी सहीहुल अक़ीदा मुसलमान जन्नती है लेकिन इसका यह मतलब हरगिज़ हरगिज़ नहीं कि हम नेक अमल करना छोड़ दें। जहाँ अल्लाह तआला ने अपने हबीब को हम गुनाहगारों का शफ़ीअ बनाया वहीं अल्लाह तआला ही ने गुनाह करने पर सज़ायें भी मुक़र्रर फ़रमाई हैं। अल्लाह व रसूल का ही फ़रमान है कि जो शख़्स

एक वक्त की नमाज़ जानबूझ कर छोड़ता है उसका नाम दोज़ख़ के दरवाज़े पर लिख दिया जाता है। .कुरआन में है कि नमाज़ में सुस्ती करने वालों के लिए जहन्नम में 'वैल' नाम की वादी है जिससे जहन्नम भी पनाह मांगता है। नमाज़ व रोज़े के फ़ज़ाइल में अहादीस इसी लिए आई कि नमाज़ और रोज़े के ज़रिए जन्नत में हमे आला मक़ाम दिलाना है। ज़कात न देने पर कितनी सख़्त सज़ाओं का हुक्म क़ुरआन व हदीस ने दिया और थोड़ा सा रुपया अल्लाह की राह में ख़र्च करने पर अल्लाह तआला ने अपने बन्दों के लिए क्या-क्या इनाम रखे हैं। हमारे आक़ा शफ़ीउल मुज़्नेबीन की शफ़ाअत बेशक हक़ है मगर इसका यह मतलब हरगिज़ हरगिज़ नहीं कि हम चोरी, शराबख़ोरी, ज़िनाकारी, .गुरूर व तकब्बुर, रियाकारी, वादा ख़िलाफ़ी और दूसरों का माल हड़पने यहाँ तक कि ज़कात का माल खाने तक जैसे गुनाहों में मुब्तिला हो जायें। आजकल दूसरों का हक़ मारने की बला आम है जिसको देखो कहीं न कहीं हुक़ूक़ुल इबाद यानी बन्दे के हक़ में मुब्तिला है, याद रखिए यह ऐसा गुनाह है जिसको अल्लाह तआला भी माफ़ न फरमाएगा और इसमें उसी की सिफ़ारिश से छुटकारा मिलेगा जिसका हक़ आ रहा होगा (यानी अगर दुनिया में किसी का पैसा नाहक़ मारा तो क़यामत में उसके बदले नेकियाँ देना होंगी या उसके बदले गुनाह लेना होंगे यानी हक़ वाले के गुनाह हक़ मारने वाले पर डाल दिए जायेंगे) अल्लाह तआला ने साफ़ फ़रमा दिया कि मैं हुक़ूक़ुल इबाद यानी बन्दे का हक़ माफ़ नहीं करूंगा जब तक कि बन्दा न माफ़ कर दे हालां कि अल्लाह तआला हमारा और उसका और हमारे और उसके हक़ सब का मालिक है मगर उसे यूंही मन्ज़ूर है। (हुक़ूक़ुल इबाद को ठीक तरह समझने के लिए आलाहज़रत का रिसाला बन्दों के हुक़ूक़ पढ़ें जो हिन्दी में भी छप चुका है)

माना कि हुज़ूरे अक़दस (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की शफ़ाअत हमारे लिए है पर क्या इसका यह मतलब है कि अब हमें अमल की ज़रूरत नहीं रही और हम अपने गुनाहों से उनको तकलीफ़ पहुँचायें ----- याद रखिए शफ़ाअत का यह मतलब हरगिज़ नहीं यह तो उनकी महब्बत को और ज़्यादा बढ़ाने का ज़रिया है। उनकी शफ़ाअत के बारे में पढ़िए और उनसे और ज़्यादा महब्बत कीजिए और बजाए गुनाहों में मुलव्विस होने के शुक्राने में और ज़्यादा

नेकियाँ कीजिए हाँ इस बात पर ख़ुश होईए कि जो गुनाह हमसे अनजाने में या नफ़्स की शरारत की बिना पर हो गए हमारे आक़ा अपने रब से अपने मनसब के मुताबिक़ सब बख़्शवा लेंगे और हम जैसे करोड़ों अरबों लोग बेहिसाब जन्नत में जायेंगे, हाँ हाँ वह गुनाहगार ही होंगे, नेकोकार तो हैं ही जन्नती, मगर याद रखो गुनाहगारो मरतबा नेकोकारों का ही बड़ा होगा, जन्नत के आला दर्जों में नेकोकार ही होंगे नमाज़ी, रोज़ादार, हाजी, ज़कात देने वाले, .क़ुरआन पढ़ने वाले और नेक अमल करने वाले लोग ही ऊँचे दर्जे में होंगे। याद रखो क़ब्र में नेक अमल काम आयेंगे, हश्र में नेकियाँ काम आयेंगी, पुलसिरात और मीज़ान पर नेकियाँ ही जल्द बेड़ा पार लगायेंगी, नेकोकार अर्शे इलाही के साये में होंगे जब सूरज सवा नेज़े पर होगा और गुनाहगार भी आक़ाए दोजहाँ की रहमत के साये में होंगे मगर कब तक उन्हें महशर के मैदान में ढूंढना पड़ेगा यह हमे नहीं मालूम।

अल्लाह तआला हमे और आपको नेक अमल करने की तौफ़ीक अता फ़रमाये और अमल करने में जो कमियाँ हों अपने हबीब के सदक़े में उन्हें माफ़ फ़रमाये और जो गुनाह फिर भी हम जैसे कमज़ोर लोगों से हो जायें तो उनकी सिफ़ारिश और शफ़ाअत से माफ़ फ़रमाये और उसी को जहन्नम में भेजे जो उनकी शफ़ाअत पर अक़ीदा न रखता हो। ---- और अल्लाह तआला हमें ऐसे लोगों से बचाए जो उनकी शफ़ाअत के क़ाएल नहीं, आजकल यह गुनाह भी आम है कि हम दुनिया के लालच में उन लोगों से दोस्ती रखते हैं जो अल्लाह और उसके हबीब के दुश्मन हैं, शायद हम ऐसे लोगों से दोस्ती रख कर अपने लिए सिफ़ारिश का रास्ता बन्द कर रहे हैं।

इस किताब को आप तक पहुँचाने में जनाब अलहाज मौलाना सग़ीर अख़तर साहब जामिया नूरिया रज़विया बाक़रगंज ने मेरी मदद फ़रमाई मैं उनको तहे दिल से शुक्रगुज़ार हूँ और पढ़ने वालों से दुआ का तालिब कि आगे और भी अच्छे अन्दाज़ से काम चलता रहे और काम में आ रहीं रुकावटें अल्लाह तआला अपने हबीब के सदक़े में दूर फ़रमाए। आमीन।

मुहम्मद अहमद
यकुम सफ़र
1422

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सवाल :- क्या फ़रमाते हैं उलमाए दीन इस मसअले में कि नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का शफ़ीअ (शफ़ाअत करने वाला) होना किस हदीस से साबित है।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अलजवाब

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الْبَصِیْرِ السَّمِیْعِ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَی الْبَشِیْرِ الشَّفِیْعِ وَعَلٰی

اٰلِہٖ وَصَحْبِہٖ کُلِّ مَسَاءٍ وَّسَطِیْعٍ

सुब्हानल्लाह ऐसे सवाल सुनकर कितना तअज्जुब आता है कि मुसलमान व मुद्दइयाने सुन्नत और ऐसे वाज़ेह अक़ाइद में तशकीक की आफ़त (यानी तअज्जुब है कि इतने साफ़ अक़ाइद के मसअले में वह लोग शक करते हैं जो सुन्नी और मुसलमान हैं) ----- यह भी क़यामत के क़रीब आने की अलामत है। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

अहादीसे शफ़ाअत भी ऐसी चीज़ हैं जो किसी तरह छुप सकें? बीसयां सहाबा सदहा (सैकड़ों) ताबेईन हज़ारहा मुहद्दिसीन उनके रावी, हदीस की तमाम किताबें सिहाह, सुनन, मसानीद, मआजिम जवामेअ़ इनसे मालामाल हैं ---- अहले सुन्नत का हर मुतानफ़्फ़िस (हर शख़्स यानी एक आम आदमी भी) यहाँ तक कि औरतें बच्चे बल्कि दहक़ानी (देहाती) जुह्हाल (जाहिल लोग) भी इस अक़ीदे से आगाह ---- ख़ुदा का दीदार मुहम्मद की शफ़ाअत एक एक बच्चे की ज़बान पर जारी।

फ़क़ीर ग़फ़रल्लाहु तआला लहू ने रिसाला "समऊँ व ताअह लि अहादीसिश्शफ़ाअह" में बहुत कसरत से इन अहादीस की जमा व तलख़ीस की है यहाँ सक्षेंप में सिर्फ़ चालीस हदीसों की तरफ़ इशारे और उनसे पहले चन्द आयाते .क़ुरआनिया की तिलावत करता हूँ। अल्लाह तआला फ़रमाता है :-

आयत न. 1 :-

عَسٰۤی اَنْ یَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا ۝

तर्जमा :- क़रीब है कि तेरा रब तुझे मक़ामे महमूद में भेजे।

सही बुख़ारी शरीफ़ में है हुज़ूर शफ़ीउल मुज़्नेबीन (मुज़्नेबीन यानी गुनाहगार --- शफ़ीउल मुज़्नेबीन यानी गुनाहगारों की शफ़ाअत करने वाले) सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम से अर्ज़ की गई मक़ामे महमूद क्या चीज़ है? फ़रमाया वह शफ़ाअत है।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है :-

आयत न. 2 :-

قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى: وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى

तर्जमा :- और क़रीब तर है तुझे तेरा रब इतना देगा कि तू राज़ी हो जाएगा।

दैलमी मुस्नदुल फ़िरदौस में अमीरुल मोमिनीन मौला अली कर्र-मल्लाहु वजहहुल करीम से रावी जब यह आयत उतरी हुज़ूर शफ़ीउल मुज़्नेबीन सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब अल्लाह तआ़ला मुझसे राज़ी करने का वादा फ़रमाता है तो मैं राज़ी न होंगा अगर मेरा एक उम्मती भी दोज़ख़ में रहा। अल्लाहुम्मा सल्लि वसल्लम व बारिक अ़लैह।

तबरानी औसत व बज़्ज़ार मुसनद में मौलल मुस्लमीन रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रावी हुज़ूर शफ़ीउल मुज़्नेबीन सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं

اَشْفَعُ لِاُمَّتِيْ حَتّٰى يُنَادِيْنِيْ رَبِّيْ اَرَضِيْتَ يَا مُحَمَّدُ فَاَقُوْلُ اَيْ رَبِّ رَضِيْتُ

तर्जमा :- मैं अपनी उम्मत की शफ़ाअत करूंगा यहाँ तक कि मेरा रब पुकारेगा ऐ मुहम्मद तू राज़ी हुआ? मैं अर्ज़ करूंगा ऐ रब मेरे मैं राज़ी हुआ।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है :-

आयत न. 3 :-

وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ

तर्जमा :- और ऐ महबूब अपने ख़ासों और आम मुसलमान मर्दों और औरतों के गुनाहों की माफ़ी मांगो।

इस आयत में अल्लाह तआ़ला अपने हबीबे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को हुक्म देता है कि मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों के गुनाह मुझसे बख़्शवाओ --- और शफ़ाअत काहे का नाम है?

अल्लाह तआला फ़रमाता है :-

आयत न. 4 :-

قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى: وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا.

तर्जमा :- और अगर वह जब अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तेरे पास हाज़िर हों फिर ख़ुदा से इस्तगफ़ार करें और रसूल उनकी बख़्शिश मांगे तो बेशक अल्लाह तआला को तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान पायें।

इस आयत में मुसलमानों को इरशाद फ़रमाता है कि गुनाह हो जाए तो इस नबी की सरकार में हाज़िर हो और उससे शफ़ाअत की दरख़्वास्त करो, महबूब तुम्हारी शफ़ाअत फ़रमाएगा तो हम यक़ीनन तुम्हारे गुनाह बख़्श देंगे।

अल्लाह तआला फ़रमाता है :-

आयत न. 5 :-

قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى: وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ لَوَّوْا رُءُوْسَهُمْ.

तर्जमा :- जब इन मुनाफ़िक़ों से कहा जाए आओ रसूलुल्लाह तुम्हारी मग़फ़िरत मांगेंगे तो अपने सर फेर लेते हैं।

इस आयत में मुनाफ़िक़ों की बदतर हालत इरशाद हुई है कि वह हुज़ूर शफ़ीउल मुज़्नेबीन सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम से शफ़ाअत नहीं चाहते और जो आज नहीं चाहते वह कल न पायेंगे ----- और जो कल न पायेंगे वह कल (चैन) न पायेंगे (यानी अज़ाब में रहेंगे)

हश्र में हम भी सैर देखेंगे
मुन्किर आज उनसे इल्तिजा न करे

अलअहादीस

शफ़ाअते कुबरा की हदीसें जिनमें साफ़ सरीः इरशाद हुआ कि महशर का दिन बहुत तवील (लम्बा) दिन होगा कि काटे न कटेगा ---- और सरों पर आफ़ताब और दोज़ख़ नज़दीक ----- उस दिन सूरज में दस बरस कामिल की गर्मी जमा करेंगे और सरों से कुछ ही फ़ासले पर लाकर रखेंगे ----- प्यास की वह शिद्दत कि ख़ुदा न दिखाए ----- गर्मी वह क़यामत की कि अल्लाह बचाए ---- बांसों पसीना ज़मीन में जज़्ब होकर ऊपर चढ़ेगा यहां तक कि गले गले से भी ऊंचा होगा ---- जहाज़ छोड़ें तो बहने लगें ---- लोग उसमें ग़ोते खायेंगे ---- लोग इन अज़ीम आफ़तों में जान से तंग आकर शफ़ीअ (शफ़ाअत या सिफ़ारिश करने वाला) की तलाश में जा-ब-जा फिरेंगे ---- आदम (यानी आदम अलैहिस्सलाम) व नूह व ख़लील (यानी हज़रते इब्राहीम अलैहिस्सलाम) व कलीम (यानी मूसा अलैहिस्सलाम) व मसीह (यानी हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम) के पास हाज़िर होकर जवाब साफ़ सुनेंगे। सब अम्बिया (नबी की जमा) फ़रमायेंगे हमारा यह मरतबा नहीं हम इस लाएक़ नहीं हमसे यह काम न निकलेगा --- नफ़्सी नफ़्सी ----तुम और किसी के पास जाओ ---- यहां तक कि सब के बाद हुज़ूर पुर नूर ख़ातमुन्नबिइय्यीन (जिन पर नुबुव्वत ख़त्म हुई) सय्येदुल अव्वलीन व आख़रीन (शुरू वाले और आख़िर वाले सब ही के सरदार) शफ़ीउल मुज़निबीन रहमतुल्लिल आलमीन (तमाम आलम के लिए रहमत) सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होंगे ------ हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम __अना लहा अना लहा__ फ़रमायेंगे यानी मैं हूँ शफ़ाअत के लिए, मैं हूँ शफ़ाअत के लिए ------- फिर अपने रब्बे करीम जल्ला जलालुहू की बारगाह में हाज़िर होकर सजदा करेंगे ----- उनका रब तबारक व तआला इरशाद फ़रमाएगा :-

'ऐ मुहम्मद अपना सर उठाओ और अर्ज़ करो तुम्हारी सुनी जाएगी और मांगो कि तुम्हें अता होगा और शफ़ाअत करो कि तुम्हारी शफ़ाअत क़बूल होगी'

यही मक़ामे महमूद होगा जहाँ तमाम अव्वलीन व आख़रीन में हुज़ूर की तारीफ़ व हम्द व सना का ग़ुल पड़ेगा ---- और मुवाफ़िक़

व मुख़ालिफ़ सब पर खुल जाएगा बारगाहे इलाही में जो वजाहत (इज़्ज़त, दबदबा) हमारे आक़ा की है किसी की नहीं ---- और मालिके अज़ीम जल्ला जलालुहू के यहाँ जो अज़मत हमारे मौला के लिए है किसी के लिए नहीं --- वल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन --- इसी के लिए अल्लाह तआला अपनी हिकमते कामिला के मुताबिक़ लोगों के दिलों में डालेगा कि पहले और अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम के पास जायें और वहाँ से महरूम फिर कर उनकी ख़िदमत में हाज़िर आयें ताकि सब जान लें कि मनसबे शफ़ाअत इसी सरकार का ख़ास्सा है यानी हुज़ूर के लिए ही ख़ास है दूसरे की मजाल नहीं कि उसका दरवाज़ा खोले --- वल हम्द लिल्लाहि रब्बिल आलमीन -----

ये हदीसें सही बुख़ारी मुस्लिम तमाम किताबों में मज़कूर और अहले इस्लाम में मारूफ़ व मशहूर हैं ज़िक्र की हाजत नहीं कि बहुत तवील हैं ---- शक लाने वाला अगर दो हर्फ़ भी पढ़ा हो तो मिश्कात शरीफ़ का उर्दू में तर्जमा मंगा कर देख ले या किसी मुसलमान से कहे कि पढ़ कर सुना दे।

और इन्हीं हदीसों के आख़िर में यह भी इरशाद हुआ है कि शफ़ाअत करने के बाद हुज़ूर शफ़ीउल मुज़्नेबीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम गुनाहगारों की बख़्शिश के लिए बार बार शफ़ाअत फ़रमायेंगे और हर दफ़ा अल्लाह तआला वही कलिमात फ़रमायेगा और हुज़ूर हर मरतबा बेशुमार बन्दगाने ख़ुदा को नजात बख़्शेंगे ---- मैं इन मशहूर हदीसों के सिवा एक अरबईन यानी चालीस हदीसें और लिखता हूँ जो अवाम के कानों तक नहीं पहुँची हों जिनसे मुसलमान का ईमान तरक़्क़ी पाए मुन्किर का दिल आतिशे ग़ैज़ (यानी ग़ुस्से की आग) में जल जाए ---- बिलख़ुसूस जिनसे उस नापाक तहरीफ़ का रद्द हो जो बाज़ बद्दीनों, ख़ुदानातरसों (ख़ुदा से न डरने वाले), नाहक़कशों (बेकार की कोशिश करने वाले), बातिलकशों (बेहूदा लोग) ने शफ़ाअत के माअनों में की और इन्कारे शफ़ाअत के चेहरए नजिस छुपाने को एक झूटी सूरत नाम की शफ़ाअत दिल से गढ़ी।

नोट : यहाँ उन लोगों की तरफ़ इशारा है जिन्होंने शफ़ाअत का ग़लत माअनी निकाल रखे हैं बल्कि कुछ लोग ऐसे भी देखे गए जो सिरे से शफ़ाअत का इन्कार करते हैं।

इन हदीसों से वाज़ेह होगा कि हमारे आक़ाए आज़म सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम शफ़ाअत के लिए मुताअय्यन (मुक़र्रर) हैं ----- उन्हीं की सरकार बेकसपनाह है यानी बेसहारों को पनाह देने वाली है----- उन्हीं के दर से बेयारों का निबाह है न जिस तरह एक बदमज़हब कहता है कि " जिसको चाहेगा अपने हुक्म से शफ़ीअ बना देगा "

ये हदीसें ज़ाहिर करेंगी कि हमें ख़ुदा व रसूल ने कान खोल कर शफ़ीअ का नाम बता दिया और साफ़ फ़रमाया कि वह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह हैं ---सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ---- न यह बात गोल रखी हो जैसे एक बदबख़्त कहता है कि " उसी के इख़्तेयार पर छोड़ दीजिए जिसको वह चाहे हमारा शफ़ीअ कर दे।

ये हदीसें मुज़दए जाफ़िज़ा (जान को बढ़ाने वाली ख़ुशख़बरी) देंगी कि हुज़ूर की शफ़ाअत न उसके लिए है जिससे इत्तेफ़ाक़न (इत्तेफ़ाक़ से) गुनाह हो गया हो और वह उस पर हर वक़्त नादिम व पशेमान (शर्मिन्दा) व तरसाँ व लरज़ाँ है यानी डर रहा है परेशान है---- जिस तरह एक दुज़्दे बातिन (यानी .ग़ुस्से की आग में) कहता है कि " चोर पर तो चोरी साबित हो गई मगर वह हमेशा का चोर नहीं और चोरी को उसने कुछ अपना पेशा नहीं ठहराया मगर नफ़्स की शामत से .क़सूर हो गया सो उस पर शर्मिन्दा है और रात दिन डरता है " ----- नहीं उनके रब की क़सम जिसने उन्हें शफ़ीउल मुज़निबीन किया उनकी शफ़ाअत हम जैसे रूसियाहों, पुरगुनाहों (गुनाहों से भरे हुए), सियाहकारों (काले करतूत वाले), सितमगारों (ज़ुल्म ओ सितम ढाने वाले) के लिए है जिनका बाल बाल गुनाह में बंधा है जिनके नाम से गुनाह भी नंग व आर (शर्म) रखता हो।

ترسم آلودہ شود دامن عصیان از من

وَحَسْبُنَا اللّٰهُ تَعَالٰی وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ ٭ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَى الشَّفِيْعِ الْجَمِيْلِ ٭
عَلٰی اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ بِاُلُوْفِ التَّبْجِيْلِ ٭ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ —

हदीस न. 1, 2 :- इमाम अहमद बसनदे सही मुसनद में हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने उमर रदियल्लाहु तआला अन्हुमा से और इब्ने माजा

हज़रते अबू मूसा अशअरी से रावी हुज़ूर शफ़ीउल मुज़्नेबीन (गुनाहगारों की शफ़ाअत करने वाले) सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं :-

خُيِّرْتُ بَيْنَ الشَّفَاعَةِ وَبَيْنَ اَنْ يَّدْخُلَ شَطْرُ اُمَّتِيْ الْجَنَّةَ فَاخْتَرْتُ الشَّفَاعَةَ لِاَنَّهَا اَعَمُّ وَاَكْفٰى اَتُرَوْنَهَا لِلْمُؤْمِنِيْنَ الْمُتَّقِيْنَ؟ لَا وَلٰكِنَّهَا لِلْمُذْنِبِيْنَ الْخَطَّائِيْنَ.

तर्जमा : अल्लाह तआला ने मुझे इख़्तेयार दिया कि या तो शफ़ाअत लो या यह कि तुम्हारी आधी उम्मत जन्नत में जाए। मैंने शफ़ाअत ली कि वह ज़्यादा तमाम और ज़्यादा काम आने वाली है क्या तुम यह समझ लिए हो कि मेरी शफ़ाअत पाकीज़ा मुसलमानों के लिए है, नहीं बल्कि वह उन गुनाहगारों के वास्ते है जो गुनाहों में आलूदा और सख़्तकार हैं।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ [illegible] وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ.

हदीस न. 3 :- इब्ने अदी हज़रत उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा रदियल्लाहु तआला अन्हा से रावी हुज़ूर शफ़ीउल मुज़्नेबीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं :-

شَفَاعَتِيْ لِلْهَالِكِيْنَ مِنْ اُمَّتِيْ۔

तर्जमा : मेरी शफ़आत मेरे उन उम्मतियों के लिए है जिन्हें गुनाहों ने हलाक कर डाला।

हक़ है ऐ शफ़ीअ मेरे --- मैं क़ुरबान तेरे --- सल्लल्लाहु अलैक।

हदीस न. 4-8 :- अबू दाऊद व तिर्मिज़ी व इब्ने हिब्बान व हाकिम व बैहक़ी बइफ़ादए तसहीह हज़रते अनस इब्ने मालिक --- और तिर्मिज़ी व इब्ने माजा व इब्ने हिब्बान व हाकिम हज़रते जाबिर इब्ने अब्दुल्लाह और तबरानी मोजमे कबीर में हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास ---- और ख़तीब बग़दादी हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने फ़ारूक़ व हज़रते कअब इब्ने अजरह रदियल्लाहु तआला अनहुम से रावी हुज़ूर शफ़ीउल मुज़्नेबीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं :-

شَفَاعَتِيْ لِاَهْلِ الْكَبَائِرِ مِنْ اُمَّتِيْ.

तर्जमा : मेरी शफ़ाअत मेरी उम्मत में उनके लिए है जो कबीरा गुनाह वाले हैं।

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْكَ وَسَلَّمَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ.

हदीस न. 9 :- अबूबक्र अहमद इब्ने अली बग़दादी हज़रते अबू दाऊद रदियल्लाहु तआला अन्हु से रावी हुज़ूर शफ़ीउल मुज़्नेबीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं :-

شَفَاعَتِيْ لِاَهْلِ الذُّنُوْبِ مِنْ اُمَّتِيْ

तर्जमा : मेरी शफ़अत मेरे गुनाहगार उम्मतियों के लिए है।

अबू दरदा रदियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ की अगरचे ज़ानी हो अगरचे चोर हो ---- फ़रमाया अगरचे ज़ानी हो अगरचे चोर हो बरख़िलाफ़ ख़्वाहिशे अबू दरदा के। (यानी जैसा कि अबू दरदा सोच रहे हैं वैसा नहीं बल्कि चोरों और ज़िनाकारों तक के लिए हुज़ूर की शफ़ाअत है)

हदीस न. 10, 11 :- तबरानी व बेहकी हज़रते बुरेदा और तबरानी मोजम औसत में हज़रते अनस रदियल्लाहु तआला अन्हु से रावी हुज़ूर शफ़ीउल मुज़्नेबीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं :-

اِنِّيْ لَاَشْفَعُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ لِاَكْثَرَ مِمَّا عَلٰى وَجْهِ الْاَرْضِ مِنْ شَجَرٍ وَّحَجَرٍ وَّمَدَرٍ.

तर्जमा : रू-ए-ज़मीन पर जितने पेड़ पत्थर ढेले हैं मैं क़यामत में उन सबसे ज़्यादा आदमियों की शफ़अत फ़रमाऊँगा।

हदीस न. 12 :- बुख़ारी मुस्लिम हाकिम बेहकी हज़रते अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु से रावी हुज़ूर शफ़ीउल मुज़्नेबीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं :-

شَفَاعَتِيْ لِمَنْ شَهِدَ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُخْلِصًا يُّصَدِّقُ لِسَانَهٗ قَلْبُهٗ.

तर्जमा : मेरी शफ़अत हर कलिमागो के लिए है जो सच्चे दिल से कलिमा पढ़े कि ज़बान की तसदीक़ दिल करता है।

हदीस न. 13 :- अहमद तबरानी व बज़्ज़ार हज़रते मुआज़ इब्ने जबल व हज़रते अबू मूसा अशअरी रदियल्लाहु तआला अन्हु से रावी हुज़ूर शफ़ीउल मुज़्निबीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं :-

إِنَّهَا أَوْسَعُ لَهُمْ هِيَ لِمَنْ مَاتَ وَلَا يُشْرِكُ بِاللّٰهِ شَيْئًا۔

तर्जमा : शफ़ाअत में उम्मत के लिए ज़्यादा वुसअत (गुन्जाइश) है कि वह हर शख़्स के वास्ते है जिसका ख़ातमा ईमान पर हो।

हदीस न. 14 :- तबरानी मोजम औसत में हज़रते अबू हुरैरा रद़ियल्लाहु तआला अन्हु से रावी हुज़ूर शाफ़ीउल मुज़निबीन स़ल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं :-

آتِیْ جَهَنَّمَ فَاَضْرِبُ بَابَهَا فَيُفْتَحُ لِيْ فَاَدْخُلُهَا فَاَحْمَدُ اللّٰهَ مَحَامِدَ مَا حَمِدَهُ اَحَدٌ قَبْلِيْ مِثْلَهُ وَلَا يَحْمَدُهُ اَحَدٌ بَعْدِيْ مِثْلَهُ ثُمَّ اُخْرِجُ مِنْهَا مَنْ قَالَ "لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ" مُخْلِصًا۔

तर्जमा : मैं जहन्नम का दरवाज़ा खुलवा कर तशरीफ़ ले जाऊँगा वहां ख़ुदा की तारीफ़ें करूँगा ऐसी कि न मुझसे पहले किसी ने कीं न मेरे बाद कोई करेगा फिर दोज़ख़ से हर उस शख़्स को निकाल लूंगा जिसने ख़ालिस दिल से **"लाइलाहाइल्लल्लाह"** कहा।

हदीस न. 15 :- हाकिम बाइफ़ादए तसहीह और तबरानी व बैहक़ी हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रद़ियल्लाहु तआला अ़न्हुमा से रावी हुज़ूर शाफ़ीउल मुज़निबीन स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं :-

يُوْضَعُ لِلْاَنْبِيَاءِ مَنَابِرُ مِنْ ذَهَبٍ يَجْلِسُوْنَ عَلَيْهَا وَيَبْقٰى مِنْبَرِيْ وَلَمْ اَجْلِسْ لَا اَزَالُ اُقِيْمُ خَشْيَةً اَنْ اُدْخَلَ الْجَنَّةَ وَيَبْقٰى اُمَّتِيْ بَعْدِيْ فَاَقُوْلُ يَا رَبِّ اُمَّتِيْ اُمَّتِيْ فَيَقُوْلُ اللّٰهُ يَا مُحَمَّدُ وَمَا تُرِيْدُ اَنْ اَصْنَعَ بِاُمَّتِكَ؟ فَاَقُوْلُ يَا رَبِّ عَجِّلْ حِسَابَهُمْ فَمَا اَزَالُ حَتّٰى اُعْطٰى ـ وَقَدْ بُعِثَ بِهِمْ اِلَى النَّارِ وَحَتّٰى اَنَّ مَالِكًا خَازِنَ النَّارِ يَقُوْلُ يَا مُحَمَّدُ مَا تَرَكْتَ لِغَضَبِ رَبِّكَ فِيْ اُمَّتِكَ مِنْ بَقِيَّةٍ۔

तर्जमा : अम्बिया के लिए सोने के मिम्बर बिछाए जायेंगे वह उन पर बैठेंगे और मेरा मिम्बर बाक़ी रहेगा कि मैं उस पर जुलूस न फ़रमाऊँगा यानी बैठूंगा नहीं बल्कि अपने रब के हुज़ूर सर ओ क़द यानी अदब से खड़ा रहूंगा इस डर से कि कहीं ऐसा न हो कि मुझे जन्नत में भेज दे और मेरी उम्मत मेरे बाद रह जाए ---- फिर अर्ज़ करूँगा

ऐ रब मेरे मेरी उम्मत मेरी उम्मत --- अल्लाह तआला फ़रमाएगा ऐ मुहम्मद तेरी क्या मर्ज़ी है मैं तेरी उम्मत के साथ क्या करूँ? अर्ज़ करूँगा ऐ रब मेरे उनका हिसाब जल्द फ़रमा दे, पस मैं शफ़ाअत करता रहूंगा यहाँ तक कि मुझे उनकी रिहाई की चिट्ठियाँ मिलेंगी जिन्हें दोज़ख़ भेज चुके थे यहां तक कि मालिक दारोगए दोज़ख़ अर्ज़ करेगा ऐ मुहम्मद आपने अपनी उम्मत में रब का ग़ज़ब नाम को न छोड़ा।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَبَارِكْ عَلَيْهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

हदीस न. 16-21 :- बुख़ारी व मुस्लिम व निसाई हज़रते जाबिर इब्ने अब्दुल्लाह और अहमद बसनदे और बुख़ारी तारीख़ में हसन व बज़्ज़ार बसनद जय्यद व दारमी व इब्ने शैबा व अबू याला व अबू नुऐम व बैहक़ी हज़रते अबू ज़र --- और तबरानी मोजमे औसत में बसनदे हज़रते अबू सईद ख़ुदरी ---- और कबीर में हज़रते साएब इब्ने यज़ीद और अहमद बइस्नादे हसन --- और इब्ने शैबा व तबरानी हज़रते अबू मूसा अशअरी रद़ियल्लाहु तआला अन्हुम से रावी हुज़ूर शफ़ीउल मुज़निबीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं :-

وَاللَّفْظُ لِجَابِرٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اُعْطِيْتُ مَا لَمْ يُعْطَهُنَّ اَحَدٌ قَبْلِيْ اِلٰى قَوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاُعْطِيْتُ الشَّفَاعَةَ

तर्जमा : इन छः हदीसों में यह बयान हुआ है कि हुज़ूर शफ़ीउल मुज़निबीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं मैं शफ़ीअ मुक़र्रर कर दिया गया और शफ़ाअत ख़ास (शफ़ाअते कुबरा) मुझी को अता होगी मेरे सिवा किसी नबी को यह मनसब न मिला।

हदीस न. 22, 23 :- इब्ने अब्बास व अबू सईद व अबू मूसा से इन्हीं हदीसों में वह मज़मून भी है जो अहमद व बुख़ारी व मुस्लिम ने अनस और शैख़ैन ने अबू हुरैरा रद़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया रद़ियल्लाहु तआला अलैहिम अजमईन कि हुज़ूर शफ़ीउल मुज़निबीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं :-

إِنَّ لِكُلِّ نَبِيٍّ دَعْوَةً قَدْ دَعَا بِهَا فِي أُمَّتِهٖ وَاُسْتُجِيْبَ لَهٗ (وهذا اللفظ لانس ولفظ ابي سعيد) لَيْسَ مِنْ نَبِيٍّ اِلَّا وَقَدْ اُعْطِيَ دَعْوَةً فَتَنَجَّزَهَا (ولفظ ابن عباس) لَمْ يَبْقَ نَبِيٌّ اِلَّا اُعْطِيَ لَهٗ (رجعنا الى لفظ انس و الفاظ الباقين كمثله معنى) قَالَ وَاِنِّي اخْتَبَأْتُ دَعْوَتِيْ شَفَاعَةً لِاُمَّتِيْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ (زاد ابو موسى) جَعَلْتُهَا لِمَنْ مَاتَ مِنْ اُمَّتِيْ لَا يُشْرِكُ بِاللّٰهِ شَيْئًا.

तर्जमा : अम्बिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की अगरचे हज़ारों दुआयें क़बूल होती हैं मगर एक दुआ उन्हें ख़ास जनाबे बारी तआला से मिलती है कि जो चाहो मांग लो बेशक दिया जाएगा ---- तमाम अम्बिया आदम से ईसा तक (अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम) सब अपनी अपनी वह दुआ दुनिया में कर चुके और मैंने आख़िरत के लिए उठा रखी ---- वह मेरी शफ़ाअत है मेरी उम्मत के लिए, क़यामत के दिन मैंने उसे अपनी सारी उम्मत के लिए रखा है जो ईमान पर दुनिया से उठा।

ऐ ख़ुदा हमें उनके मकामो मरातब के तुफ़ैल उनकी शफ़ाअत अता फ़रमा अल्लाहु अकबर! ऐ गुनाहगाराने उम्मत! क्या तुमने अपने मालिक व मौला सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की यह कमाले राफ़त व रहमत अपने हाल पर न देखी? कि बारगाहे इलाही अज़्ज़ जलालुहू से तीन सवाल हुज़ूर को मिले कि जो चाहो मांग लो अता होगा। हुज़ूर ने उनमें कोई सवाल अपनी ज़ाते पाक के लिए न रखा, सब तुम्हारे ही काम में सर्फ़ फ़रमा दिए। दो सवाल दुनिया में किए वह भी तुम्हारे ही वास्ते --- तीसरा आख़िरत को उठा रखा वह तुम्हारी उस अज़ीम हाजत के वास्ते जब उस मेहरबान मौला रऊफ़ुर्रहीम आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सिवा कोई काम आने वाला बिगड़ी बनाने वाला न होगा --- सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ---- हक़ फ़रमाया ---- हज़रते हक़ अज़्ज़-ज-व-जल्ल ने

عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ

तर्जमा : जिन पर तुम्हारा मशक़्क़त में पड़ना गिरां है तुम्हारी भलाई के निहायत चाहने वाले मुसलमानों पर कमाल मेहरबान मेहरबान।

वल्लाहिल अज़ीम क़सम उसकी जिसने उन्हें हम पर मेहरबान किया कि हरगिज़ हरगिज़ कोई माँ अपने अज़ीज़ प्यारे इकलौते बेटे पर इतनी मेहरबान नहीं जिस क़द्र वह अपने एक उम्मती पर मेहरबान हैं --- सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ---

इलाही! तू हमारा इज्ज़ (आजज़ी) व .ज़ुअफ़ (कमज़ोर होना) और उनके हुक़ूक़े अज़ीमया की अज़मत जानता है ऐ क़ादिर! ऐ वाजिद! ऐ माजिद! हमारी तरफ़ से उन पर और उनकी आल पर वह बरकत वाली दुरूदें नाज़िल फ़रमा जो उनके हुक़ूक़ को वाफ़ी हों और उनकी रहमतों को मुकाफ़ी।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ بِقَدْرِ رَأْفَتِهٖ وَرَحْمَتِهٖ بِاُمَّتِهٖ وَقَدْرِ رَأْفَتِكَ وَرَحْمَتِكَ بِهٖ اٰمِيْنَ اٰمِيْنَ اِلٰهَ الْحَقِّ اٰمِيْنَ ———

सुब्हानल्लाह! उम्मतियों ने उनकी रहमतों का यह मुआवज़ा रखा कि कोई अफ़ज़लियत में तशकीकें निकालता है (यानी उनके सबसे अफ़ज़ल होने में शक करता है), कोई उनकी शफ़ाअत में शुबा डालता है, कोई उनकी तारीफ़ अपनी सी जानता है, कोई उनकी ताज़ीम पर बिगड़ कर करता है --- अफ़आले महबूब का बिदअत नाम --- इजलालो अदब पर शिर्क के अहकाम। (यानी आलाहज़रत फ़रमा रहे हैं कि हमारे आक़ा तो हम पर इतने मेहरबान कि हर वक़्त हमें याद रखें और कुछ लोग हैं कि उनके मरतबे में शक करते हैं बल्कि बाज़ तो अपने जैसा बशर जानते हैं) वला हौल। वलाकुव्वता इल्लाबिल्ला हिल अलिइयिल अज़ीम। ----- इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

हदीस न. 24 :- सहीह मुस्लिम में हज़रते उबई इब्ने कअब रदियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी हुज़ूर शफ़ीउल मुज़निबीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं :-

अल्लाह तआला ने मुझे तीन सवाल अता फ़रमाए मैंने दो बार तो दुनिया में अर्ज़ कर ली इलाही मेरी उम्मत की मग़फ़िरत फ़रमा इलाही मेरी उम्मत की मग़फ़िरत फ़रमा --- और तीसरी अर्ज़ उस दिन के लिए उठा रखी जिस मे तमाम मख़लूक़े इलाही मेरी तरफ़ नियाज़मन्द होगी यहाँ तक कि इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलातु वस्सलाम ----

——— وَصَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلَيْهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ———

हदीस न. 25 :- बेहक़ी हज़रते अबू हूरैरा रद़ियल्लाहु तआला अ़न्हु से रावी हुज़ूर शफ़ीउल मुज़निबीन स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने शबे असरा अपने रब से अर्ज़ की तूने अम्बिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम को ये-ये फ़ज़ाइल बख़्शे। रब तबारक व तआ़ला ने फ़रमाया :-

أَعْطَيْتُكَ خَيْرًا مِّنْ ذَالِكَ (الى قوله) خَبَأْتُ شَفَاعَتَكَ وَلَمْ أَخْبَأْهَا لِنَبِيٍّ غَيْرِكَ.

तर्जमा : मैने तुझ अता फ़रमाया वह उन सबसे बेहतर है मैने तेरे लिए शफ़ाअत छुपा कर रखी और तेरे सिवा दूसरे को न दी।

हदीस न. 26 :- इब्ने अबी शैबा व तिर्मिजी बइफ़ादए तहसीन व तसहीह और इब्ने माजा व हाकिम बहुक्मे तसहीह हज़रते उबई इब्ने कअ़ब रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रावी हुज़ूर शफ़ीउल मुज़निबीन स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं :-

وَإِذَا كَانَ يَوْمُ الْقِيٰمَةِ كُنْتُ إِمَامَ النَّبِيِّيْنَ وَخَطِيْبَهُمْ وَصَاحِبَ شَفَاعَتِهِمْ غَيْرَ فَخْرٍ.

तर्जमा : क़यामत के दिन मैं अम्बिया का पेशवा और उनका ख़तीब और उनका शफ़ाअत वाला होंगा और यह कुछ फ़ख़्र की राह से नहीं फ़रमाया।

हदीस न. 27-40 :- इब्ने मनीअ़ हज़रते ज़ैद इब्ने अरक़म वग़ैरह चौदह सहाबाए किराम रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम से रावी हज़रते शफ़ीउल मुज़निबीन स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं :-

شَفَاعَتِيْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ حَقٌّ فَمَنْ لَّمْ يُؤْمِنْ بِهَا لَمْ يَكُنْ مِّنْ أَهْلِهَا.

तर्जमा : मेरी शफ़ाअत रोज़े क़यामत हक़ है जो इस पर ईमान न लाएगा इस के क़ाबिल न होगा।

मुन्किरे मिस्कीन हदीसे मुतावातिर को देखे और अपनी जान पर रह़म करके शफ़ाअते मुस्तफ़ा स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर ईमान लाए।

اَللّٰهُمَّ إِنَّكَ تَعْلَمُ أَنَّكَ هَدَيْتَ فَآمَنَّا بِشَفَاعَةِ حَبِيْبِكَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ
وَسَلَّمَ — فَاجْعَلْنَا مِنْ أَهْلِهَا فِى الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ؞ يَا أَهْلَ التَّقْوٰى وَأَهْلَ الْمَغْفِرَةِ ؞
وَاجْعَلْ أَشْرَفَ صَلَوَاتِكَ ؞ وَأَنْمٰى بَرَكَاتِكَ ؞ وَأَزْكٰى تَحِيَّاتِكَ ؞ عَلٰى هٰذَا الْحَبِيْبِ الْمُجْتَبٰى
وَالشَّفِيْعِ الْمُرْتَجٰى ؞ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ دَائِمًا أَبَدًا — اٰمِيْن اٰمِيْن يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.
وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ —

जाएज़ा

इस रिसालए मुबारका "इस्माउल अरबईन फ़ी शफ़ाअति सय्यिदिल महबूबीन" में 43 से ज़्यादा हदीसें बयान हुई हैं ---- चालीस अहादीस ज़ेरे उनवाने "अलअहादीस" और तीन हदीसें तफ़सीरे आयात के तहत ---- एक मतने हदीस का ख़ुलासा "अलअहादीस" की तम्हीद में ---- यह हदीस मुताअद्दिद सहाबा से मरवी है --- लिहाज़ा अददे सहाबा के मुताबिक़ शुमारे हदीस भी फ़ज़ू होगा यानी जितने सहाबा से हदीस मरवी होगी हदीस की तादाद भी उतनी ही होगी।

मुन्तख़ब चालीस हदीसें ऐसी हैं जिन से मुताल्लिक़ आलाहज़रत ने फ़रमाया है ----- मैं इन मशहूर हदीसों के सिवा एक अरबईन यानी चालीस हदीसें और लिखता हूँ जो आम आदमी के कान तक कम पहुँची हैं --- इस लिहाज़ से यह इन्तिख़ाब बहुत अहम है

रिसाले के शुरू में आलाहज़रत ने एक दूसरे मज़बूत रिसाले "समऊँ व ताअह लि अहादीसिश्शफ़ाअह" का ज़िक्र फ़रमाया है ----- यह रिसाला हमारी नज़र से नहीं गुज़रा शायद छपा नहीं है, अन्दाज़ है कि उसमें 200 हदीसें होंगी --- इस अन्दाज़े की बहुत सी वुजूह हैं जो आहदीसे शफ़ाअत के तवातुर से बाख़बर और आलाहज़रत की किताबों के पढ़ने वालों से छुपी नहीं।

ولله الحمد والمنة والصلوة على حبيبه سيد العالمين وعلى آله وصحبه أجمعين

मुहम्मद अहमद आज़मी मिस्बाही

27.04.1401

मुज़दा शफ़ाअत का

पेशे हक़ मुज़दा शफ़ाअत का सुनाते जायेंगे
आप रोते जायेंगे हम को हँसाते जायेंगे

दिल निकल जाने की जा है आह किन आँखों से वह
हम से प्यासों के लिए दरिया बहाते जायेंगे

कुश्तगाने गर्मी-ए महशर को वह जाने मसीह
आज दामन की हवा दे कर जिलाते जायेंगे

गुल खिलेगा आज यह उनकी नसीमे फ़ैज़ से
ख़ू। रोते आयेंगे हम मुस्कुराते जायेंगे

हां चलो हसरतज़दो सुनते हैं वह दिन आज है
थी ख़बर जिसकी कि वह जलवा दिखाते जायेंगे

आज ईदे आशिक़ाँ है गर ख़ुदा चाहे कि वह
आबरुए पेवस्ता का आलम दिखाते जायेंगे

कुछ ख़बर भी है फ़क़ीरो आज वह दिन है कि वह
नेअ़मते ख़ुल्द अपने सदक़े में लुटाते जायेंगे

ख़ाक उफ़तादो बस उनके आने ही की देर है
ख़ुद वह गिर कर सजदा में तुम को उठाते जायेंगे

वुसअ़तें दी हैं ख़ुदा ने दामने महबूब को
जुर्म खुलते जायेंगे और वह छुपाते जायेंगे

लो वह आये मुस्कुराते हम असीरों की तरफ़
ख़िर्मने इसयाँ पर अब बिजली गिराते जायेंगे

आँख खोलो गमज़दो देखो वह गिरयाँ आये हैं
लौहे दिल से नक़्शे ग़म को अब मिटाते जायेंगे

सोख़ता जानों पे वह पुर जोशे रहमत आये हैं
आबे कौसर से लगी दिल की बुझाते जायेंगे

आफ़ताब उनका ही चमकेगा जब औरों के चराग़
सरसरे जोशे बला से झिलमिलाते जायेंगे

पाये कोबाँ पुल से गुज़रेंगे तेरी आवाज़ पर
रब्बे सल्लिम की सदा पर वज्द लाते जायेंगे

सरवरे दीं लीजे अपने नातवानों की ख़बर
नफ़्सो शैताँ सय्यदा कब तक दबाते जायेंगे

हश्र तक डालेंगे हम पैदाइशे मौला की धूम
मिस्ले फ़ारस नज्द के क़िलओ गिराते जायेंगे

ख़ाक हो जायें अदू जल कर मगर हम तो 'रज़ा'
दम में जब तक दम है ज़िक्र उनका सुनाते जायेंगे

पेशे हक़ → अल्लाह तआला के सामने, मुज़दा → ख़ुशख़बरी कुश्तगाने गर्मी महशर → महशर में गर्मी से मारे हुए, गुल → फूल, नसीमे फ़ैज़ → फ़ैज़ की ठंडी हवा, ईदे अशकाँ → आशिक़ों की ख़ुशी का दिन यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के आशिकों के लिए क़यामत का दिन ख़ुशी का दिन होगा कि आज उनका दीदार होगा, अबरुए पेवस्ता → मिली हुई भवें, नेमते ख़ुल्द → जन्नत की नेअमत, ख़ाक उफ़तादों → ख़ाक में गिरे पड़े लोग, वुसअतें → गुन्जाइश, असीरों → कैदियों यानी गुनाहगार, ख़िरमने इसयाँ --> गुनाहों का खलयान, ग़मज़दो → ग़म के मारे, गिरयाँ → गिड़गिड़ाते, लौहे दिल → दिल की तख़्ती, सोख़ता जानों → जान जले हुए, पुर जोश → जोश से भरे हुए, आबे कौसर → कौसर जन्नत के एक चश्मे का नाम जो रोज़े क़यामत जारी होगा आबे कौसर यानी कौसर का पानी, आफ़ताब → सूरज, सरसरे जोशे बला → आंधी की हवा, पाए कोबाँ → बहुत थके हुए पांव लिए हुए यानी नामालूम कितने हज़ार बरस के थके हारे कहाँ कहाँ से भटकते हुए जब आख़री मन्ज़िल पर होंगे, रब्बे सल्लिम → जब हुज़ूर के उम्मती पुलसिरात से गुज़रेंगे तब हुज़ूर वहाँ पर खड़े फ़रमा रहे होंगे रब्बिसल्लिम यानी ऐ अल्लाह इन्हें सलामती से गुज़ार दे, सरवरे दीं → दीन के सरदार यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम, नातवानों → कमज़ोर लोग, मिस्ले फ़ारस नज्द के क़िलओ गिराते जायेंगे - यानी जिस तरह फ़ारस के क़िले मुसलमानों ने गिराए थे उसी तरह नज्दियों यानी वहाबियों के क़िलओ गिराते जायेंगे, अदू → दुश्मन, रज़ा → आलाहज़रत इमाम अहमद रज़ा रदियल्लाहु तआला अन्हु का तख़ल्लुस।

मुनाजात

या इलाही हर जगह तेरी अता का साथ हो
जब पड़े मुश्किल शहे मुश्किल कुशा का साथ हो

या इलाही भूल जाँऊ नज़अ की तकलीफ़ को
शादीए दीदारे हुस्ने मुस्तफ़ा का साथ हो

या इलाही गोरे तीरा की जब आये जब सख़्त रात
उनके प्यारे मुँह की सुबहे जाँफ़िज़ा का साथ हो

या इलाही जब पड़े महशर में शोरे दारोगीर
अम्न देने वाले प्यारे पेशवा का साथ हो

या इलाही जब ज़बानें बाहर आयें प्यास से
साहिबे कौसर शहे जूदो अता का साथ हो

या इलाही सर्द मेहरी पर हो जब ख़ुर्शीदे हश्र
सय्यदे बेसाया के ज़िल्ले लिवा का साथ हो

या इलाही गर्मीए महशर से जब भड़कें बदन
दामने महबूब की ठंडी हवा का साथ हो

या इलाही नामए आमाल जब खुलने लगें
ऐब पोशे ख़ल्क़, सत्तारे ख़ता का साथ हो

या इलाही जब बहें आंखें हिसाबे जुर्म में
उन तबस्सुम रेज़ होटों की दुआ का साथ हो

या इलाही जब हिसाबे ख़न्दए बेजा रुलाए
चश्मे गिरयाने शफ़ीए मुरतजा का साथ हो

या इलाही रंग लायें जब मेरी बेबाकियां
उनकी नीची नीची नज़रों की हया का साथ हो

या इलाही जब चलूँ तारीक राहे पुलसिरात
आफ़ताबे हाशमी नूरुल हुदा का साथ हो

या इलाही जब सरे शमशीर पर चलना पड़े
रब्बे सल्लिम कहने वाले ग़मज़ुदा का साथ हो

या इलाही जो दुआयें नेक हम तुझसे करें
क़ुदसियों के लब से आमीं रब्बना का साथ हो

या इलाही जब 'रज़ा' ख़्वाबे गिराँ से सर उठाये
दौलते बेदारे इश्के मुस्तफ़ा का साथ हो

मुश्किल कुशा → मुश्किल दूर करने वाले, नज़ा की तकलीफ़ → मौत के वक़्त जो तकलीफ़ होती है उसे नज़ा की तकलीफ़ कहते हैं, शादिए दीदारे हुस्ने मुस्तफ़ा → रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को देखने की ख़ुशी, गोरे तीरा → अंधेरी क़ब्र, सुबहे जाँफिज़ा → ख़ुश करने वाली सुबह, शोरे दारो गीर → पकड़ धकड़ का शोर, साहिबे कौसर → कौसर जन्नत के एक चश्मे का नाम है जो रोज़े क़यामत जारी होगा ---- साहिबे कौसर यानी कौसर के मालिक यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम, सर्द महरी → बेरहमी, बेमुरव्वती; ख़ुर्शीदे हश्र → क़यामत के दिन का सूरज, सय्यदे बेसाया → यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम कि जिनका साया न था, ज़िल्ले लिवा → हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के झंडे का साया, ऐब पोशे ख़ल्क़ → मख़्लूक़ के ऐब छुपाने वाले, सत्तारे ख़ता → ख़ता ढकने वाले, हिसाबे जुर्म में → जुर्म के हिसाब में, तबस्सुम रेज़ होंट → मुस्कराते होंट, ख़न्दए बेजा → बेमौक़े की हंसी, चश्मे गिरयाने → रोती हुई आंखें, शफ़ीअ → शफ़ाअत करने वाले, मुरतजा → जिससे उम्मीदें लगी हों, आफ़ताबे हाशमी → हाशमी ख़ानदान के सूरज, नूरुल हुदा → हिदायत की रोशनी, सरे शमशीर → यानी पुलसिरात पर जो कि तलवार से ज़्यादा तेज़ और बाल से ज़्यादा महीन होगा, रब्बिसल्लिम → जब हुज़ूर के उम्मती पुलसिरात से गुज़रेंगे तब हुज़ूर वहाँ पर खड़े फ़रमा रहे होंगे रब्बिसल्लिम यानी ऐ अल्लाह इन्हें सलामती से गुज़ार दे, ग़मज़ुदा → ग़म दूर करने वाले, .क़ुदसी → फ़रिशते, ख़्वाबे गिराँ → बहुत गहरी नींद, दौलते बेदारे इश्क़े मुस्तफ़ा → हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की जीती जागती महब्बत।

क़ता

अल्लाह की सर ता ब क़दम शान हैं ये
इनसा नहीं इन्सान वह इन्सान हैं ये
.क़ुरआँ तो ईमान बताता है इन्हें
ईमान यह कहता है मेरी जान हैं ये